Toppersnotes®
Unleash the topper in you

C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उच्च प्राथमिक स्तर (कला वर्ग)

भाग – 2 (अ)

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

CTET व अन्य परीक्षाओं में पद्यांश/गद्यांश से प्रश्न हमेशा पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों को आप बहुत आसानी से हल कर सकते हैं, यदि आप हिन्दी भाषा से सम्बन्धित नियमों का अध्ययन ध्यानपूर्वक करें।

यहाँ हमने बहुत ही साधारण भाषा में विषय को समझाया गया है तथा विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से भी अवधारणा को स्पष्ट किया गया हैं।

नोट्स को पढ़ने के बाद आप पद्यांश से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों को आसानी से हल कर पायेंगे।

इस प्रकार से प्रश्नों को परीक्षार्थी की योग्यता जाँचने का सर्वोच्च मापदंड माना जाता हैं तथा परीक्षार्थी की सही सूझबूझ और सही क्षमता की परख की जा सकती हैं।

- पद्यांश को ध्यानपूर्वक तथा समय की बचत करते हुए पढ़ें तथा उसकी विषयवस्तु तथा केन्द्रीय भाव जानने का प्रयास करें।
- जिस विषय के बारे में कई बार बात पद्यांश में की जाए, वह उसका केन्द्रीय भाव या शीर्षक हो सकता है।
- जो तथ्य पद्यांश को पढ़ते समय महत्वपूर्ण लगे, उन्हें रेखांकित अवश्य करें जिससे प्रश्न हल करने में कम समय लगें।
- प्रश्नों के सही उत्तर को ध्यानपूर्वक चिन्हित करें।
- उत्तर पद्यांश पर आधारित होना चाहिए ना कि कल्पनात्मक।
- पद्यांश में उपलब्ध जानकारी को सही मानते हुए सही उत्तर निकालने का प्रयास करें।

CTET LEVEL – 2 (कला वर्ग) – 2022

CONTENTS

हिन्दी		
1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	4
3.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	7
4.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	10
5.	तत्सम – तद्भव	13
6.	देशज शब्द	15
7.	उपसर्ग	17
8.	प्रत्यय	20
9.	संधि	24
10.	समास	41
11.	संज्ञा	50
12.	सर्वनाम	55
13.	विशेषण	57
14.	क्रिया	58
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	60
16.	पर्यायवाची	64
17.	विलोम शब्द	67
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	75
19.	शब्द युग्म	81
20.	एकार्थी शब्द	92
21.	वर्तनी शुद्धि	99
22.	वाक्य भेद	103
23.	पद बंध	105
24.	पद परिचय	108

25.	वचन	111
26.	लिंग	114
27.	काल	119
28.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	122
29.	कारक एवं विभक्ति	126
30.	काव्य में भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, शिल्प सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	132
31.	मुहावरे	136
32.	लोकोक्ति	146
33.	गद्यांश एवं पद्यांश	159
	हिन्दी भाषा शिक्षण	
1.	हिन्दी शिक्षण	168
2.	हिन्दी शिक्षण विधि	173
3.	भाषा शिक्षण के उपागम	198
4.	भाषा दक्षता का विकास	201
5.	भाषा कौशल	204
6.	भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ	212
7.	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	214
8.	भाषा शिक्षण में आंकलन, मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण	220
9.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	228
10.	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	231

वर्ण विचार

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर - 3 प्रकार
(i) हस्व स्वर - जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है -
अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या -4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर - जिनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है - आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या - 7)

(iii) प्लुत स्वर - जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है - स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे :- अ^{3}, आ^{3}, इ^{3}, ई^{3}, उ^{3}, ऊ^{3}, ए^{3}, ऐ^{3}, ओ^{3}, औ^{3},

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार)
(i) अनुनासिक स्वर - स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोटः- अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे :- अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं
(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर - जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।

बिना चन्द्र बिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे :- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।

(3) जिह्वा के आधार पर :- (3 प्रकार)
(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे - इ, ई, ए, ऐ
(ii) मध्य स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन - अ

(iii) पश्च स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

मध्य - अ - मध्य
इ ई ए ऐ - अग्र
आ उ ऊ ओ औ - पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर - 2 प्रकार
(i) वृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना ।
जैसे :- उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर-नीचे फैलना ।
जैसे - अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर - 04 प्रकार
(i) संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना ।
जैसे - इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना - ए, ओ

(iii) विवृत - उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना । जैसे - आ

(iv) अर्द्धविवृत :- उच्चारण करने पर विवृत से थोडा कम खुलना ।
जैसे - अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 व्यंजन ध्वनियाँ होती है। जिनको तीन भागों में बाँटा गया है।

(i) स्पर्श व्यंजन - (27)
(ii) अतः स्थ व्यंजन - (04)
(iii) उष्म व्यंजन - (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है -
(अ) 'क' वर्ग - क् ख् ग् घ् ङ्.
(ब) 'च' वर्ग - च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग - ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण्
(द) 'त' वर्ग - त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग - प् फ् ब् भ् म्

(ii) अतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन - 4
जैसे :- य् व् र् ल्

(iii) उष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह उष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल उष्म व्यंजन - 4
जैसे - श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन :- इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है।
क्ष - क् + ष
त्र - त् + र
ज्ञ - ज् + ञ
श्र - श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण - मुख्यतः 2 प्रकार
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर -

i. कण्ठ स्थान - 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र - अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान - तालव्य वर्ग
सूत्र - इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान - मूर्धन्य वर्ण
सूत्र - ऋटुरषाणां मूर्धा
ऋ,ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ड़,ढ,ढ़,ण) र, ष

iv. दन्त स्थान - दन्त्य वर्ण
सूत्र - लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान - ओष्ठ्य वर्ण
सूत्र - उपूपध्मानीया ना मो ष्ठौं
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ᳵप, ᳵफ)

vi. नासिका स्थान - नासिक्य वर्ण
सूत्र - नासिका अनुस्वारस्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान - दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र - वकारस्य दन्तोष्ठम् - व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है -
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर - इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है।

1) अघोष वर्ण - प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
2) घोष वर्ण - प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड़, ढ़ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर -

मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।

1) अल्पप्राण - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ड़ + य, र, ल, व + सभी स्वर

2) महाप्राण - प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह

(iii). उच्चारण के आधार पर -

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) - च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) - श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) - ङ, ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) - ड़, ढ़
6) प्रकंपित व्यंजन (1) - र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) - ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) - य, व

वर्ण विश्लेषण

परिभाषा – शब्द में प्रयोग की गयी ध्वनियों को अलग–अलग लिखने के कार्य को वर्ण विश्लेषण कहते है।

- हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
  (i) स्वर
  (ii) व्यंजन
- वर्ण विश्लेषण करने के लिए स्वरों की मात्राओं का ज्ञान होना बहुत जरूरी हैं।

वर्ण विश्लेषण के उदाहरण

"अ" स्वर के उदाहरण
कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ
रमन – र् + अ + म् + अ + न् + अ
हम – ह् + अ + म् + अ
कल – क् + अ + ल् + अ

"आ" स्वर के उदाहरण
रामा – र् + आ + म् + आ
माला – म् + आ + ल् + आ
हराना – ह् + अ + र् + आ + न् + आ

"इ" स्वर के उदाहरण
पिहर – प् + इ + ह् + अ + र् + अ
किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ

"ई" स्वर के उदाहरण
जीवन – ज् + ई + व् + अ + न् + अ
कहानी – क् + अ + ह् + आ + न् + ई
हरी – ह् + अ + र् + ई
साही – स् + आ + ह् + ई

"उ" स्वर के उदाहरण
उपर – उ + प् + अ + र् + अ
अतुल – अ + त् + उ + ल् + अ
अनुसार – अ + न् + उ + स् + आ + र् + अ
कबुतर – क् + अ + ब् + उ + त् + अ + र् + अ

"ऊ" स्वर के उदाहरण
दूसरा – द् + ऊ + स् + अ + र् + आ
भूरा – भ् + ऊ + र् + आ
हूनर – ह् + ऊ + न् + अ + र् + अ

"ऋ" स्वर के उदाहरण
ऋषि – ऋ + ष् + इ
पितृ – प् + इ + त् + ऋ
मातृ – म् + आ + त् + ऋ

"ए" स्वर के उदाहरण
रेल – र् + ए + ल् + अ
बेकरार – ब् + ए + क् + अ + र् + आ + र् + अ
खेल – ख् + ए + ल् + अ

"ऐ" स्वर के उदाहरण
तैयार – त् + ऐ + य् + आ + र् +अ
मैदान – म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
शैतान – श् + ऐ + त् + आ + न् + अ

"ओ" स्वर के उदाहरण
मोहर – म् + ओ + ह् + अ + र् + अ
कोबरा – क् + ओ + ब् + अ +र् + आ
कोयल – क् + ओ + य् + अ +ल् + अ
सोना – स् + ओ + न् + आ

"औ" स्वर के उदाहरण
औरत – औ + र् + अ + त् + अ
औषधि – औ + ष् + अ + ध् + इ
कौशल – क् + औ + श्+ अ +ल् + अ

संयुक्त व्यंजन के उदाहरण
उद्योग – उ + द् + य्+ ओ +ग् + अ
विद्या – व् + इ + द्+ य् +आ
न्याय – न् + य् + आ+ य् +अ
उज्जवल – उ + ज् + ज्+ व् +अ + ल् + अ

"अनुस्वार" के उदाहरण
संतोष – स् + अं + त्+ ओ +ष् + अ
नंदन – न् + अं + द्+ अ +न् + अ
वंदन – व् + अं + द्+ अ +न् + अ

"चन्द्रबिन्दु" के उदाहरण
काँस्य – क् + आँ + स्+ य् +अ
नाँद – न् + आँ + द् + अ
चाँद – च् + आँ + द् + अ
आँचल – आँ + च् + अ + ल् +अ

संयुक्त अक्षरों का विश्लेषण
क्षमा – क् + ष् + अ+ म् +आ
शिक्षा – श् + इ + क् + ष् +आ
कक्षा – क् + अ + क् + ष् +आ
त्रिशुल – त् + र् + इ + श् +उ + ल् + अ
त्रिकाल – त् + र् + इ+ क् +आ + ल् + अ
मित्र – म् + इ + त् + र् +अ
ज्ञानी – ज् + ञ् + आ + न् +ई

यज्ञ – य् + ज् + ञ् + अ
श्रोता – श् + र् + ओ + त् + आ
श्रेष्ठ – श् + र् + ए + ष् + ठ् + अ

"र्" के विभिन्न रूपों के उदाहरण
करम – क् + अ + र् +अ + म् + अ
कर्म – क् + अ + र्+ म् +अ
क्रम – क् + र् + अ + म् +अ
कृषि – कृ + ऋ + ष् + इ

वर्ण विश्लेषण के अन्य उदाहरण
वरूण – व् + अ + र्+ उ +ण् + अ
प्राथमिक – प् + र् + आ + थ् +अ+ म् + इ + क् + अ
फेन – फ् + ए + न् + अ
भगवान – भ् + अ + ग्+ अ +व्+ आ + न् + अ
श्रमदान – श् + र् + अ+ म् +अ+ द् + आ + न् + अ
संतान – स् + अं + त् + आ +न् + अ
साक्ष्य – स् + आ + क्+ ष् +य्+ अ
यश – य् + अ + श्+ अ
पत्र – प् + अ + त् + र् +अ
तितली – त् + इ + त्+ अ +ल् + ई
दामोदर – द् + आ + म्+ ओ +द्+ अ + र् + अ
आरक्षण – आ + र् + अ+ क् +ष्+ अ + ण् + अ
विज्ञान – व् + इ + ज्+ ञ् +अ+ न् + अ
आँख – आँ + ख् + अ
अवगुण – अ + व् + अ+ ग् + उ + ण् + अ
इन्तजार – इ + न् + त् + अ +ज् + आ + र् + अ
त्योहार – त् + य् + ओ + ह् + आ + र् + अ
गोरव – ग् + ओ + र्+ अ +व् + अ
तोंद – त् + ओं + द्+ अ
दण्डक – द् + अ + ण्+ ड् +अ+ क् + अ
नाटकीय – न् + आ + ट्+ अ +क् + ई + य् + अ
उधार – उ + ध् + आ+ र् +अ
एकाग्र – ए + क् + आ + ग् +र् + अ
ऋग्वेद – ऋ + ग् + व्+ ए +द् + अ
ओंकार – ओं + क् + आ+ र् +अ
कछुवा – क् + अ + छ्+ उ +व् + आ
नियोजक – न् + इ + य्+ ओ +ज् + अ + क् + अ
परिपूर्ण – प् + अ + र्+ इ +प् + ऊ + र् + ण् + अ
परिभाषा – प् + अ + र्+ इ +भ् + आ + ष् + आ
कागज – क् + आ + ग्+ अ +ज् + अ
विश्राम – व् + इ + श् + र् +आ + म् + अ
आँचल – आँ + च् + अ+ ल् +अ
सफलता – स् + अ + फ्+ अ +ल् + अ + त् + आ

शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)

- शब्दों के संग्रह को ही शब्दकोश कहते हैं।
- शब्दकोश में शब्दों का इस प्रकार संग्रह किया जाता है कि उनका एक निश्चित क्रम बना रहे।
- शब्दकोश में शब्दों को लिखने वाले को हिन्दी वर्णमाला का गंभीर ज्ञान होना आवश्यक है। उसे शब्दों के उच्चारण तथा किसी शब्द में प्रयुक्त वर्गों के क्रम का भी स्पष्ट ज्ञान होना जरूरी हैं।

1. शब्दकोश में सबसे पहले अं/अँ, अः (बिन्दु, चन्द्रबिन्दु) से शुरु होने वाले शब्दों को रखा जाता है।
जैसे – अंबर, अलख
अंबर – अं + व् + अ + र् + अ
अलख – अ + ल् + अ + ख् + अ
2. अं/अँ के बाद अन्य स्वर वर्ण आते हैं।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
3. स्वरों के बाद व्यंजन आते हैं।
4. क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन है इनमें इन वर्णों का उद्भव निम्न वर्णों के मिलन से हुआ है–

क्ष	–	क् + ष् + अ
त्र	–	त् + र् + अ
ज्ञ	–	ज् + ञ् + अ
श्र	–	श् + र् + अ

अतः क्ष का स्थान 'क' के बाद त्र का स्थान 'त' के बाद ज्ञ शब्द को 'ज' के बाद रखा जाता है। व श्र को ष के बाद क्रम दिया गया है।

क	क्ष	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	ज्ञ	झ	ञ
ट	ठ	ड(ड़)	ढ(ढ़)	ण	
त	त्र	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
श	श्र	ष	स	ह	

- ड़ को ड के बाद व ढ़ को ढ के बाद क्रम स्थान दिया गया है।
- र की मात्रा वाले अक्षरों को उच्चारण के अनुसार रखा जाता है। जैसे–'र्क' 'कृ' 'क्र'
- मानक शब्दकोश के अनुसार दूसरे अक्षर का क्रम निम्न प्रकार से होता है।
  अं/अँ अक, अख, अग, अघ .... अह।

उपर्युक्त क्रम के बाद प्रथम अक्षर पर मात्रा वाले शब्दों का क्रम रहता है। का, कि, की, कु , कू।
मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम के अनुसार आते हैं। जैसे– क्क, क्ख, क्त, ...।

1. अंक, आँख, अहि, अंकित, अक्ष, अक्षर, अमन, अतुल, अनिल शब्दों का सही क्रम निर्धारण होगा।

अंक –	अं + क् + अ	1
आँख –	आं + ख् + अ	9
अहि–	अ + ह् + इ	8
अंकित –	अं + क् + इ + त् + अ	2
अक्ष –	अ + क् + ष् + अ	3

अक्षर –	अ + क् + ष् + अ + र् + अ	4
अमन –	अ + म् + अ + न् + अ	7
अतुल –	अ + त् + उ + ल् + अ	5
अनिल –	अ + न् + इ + ल् + अ	6

व्याख्या

सबसे पहले अनुस्वार वर्ण (अं) को शब्दकोश कर्म में रखा जाता है तो अंक, अंकित शब्द आएंगे पर इनमें से निर्धारण करने पर अंक (अ + क् + अ) से बना है अंकित (अं + क् + इ + त् + अ) से बना है तो अंक में क् + के बाद अ होने पर पहले व अंकित में अं के बाद इ के आनें से अंकित बाद में आता है। इसके बाद अक्ष, अक्षर शब्द आयेंगें क्योंकि अक्ष शब्द (अ + क् + ष् + अ) से बना है इसके बाद क्रमशः वर्णों के अनुसार अतुल, अनिल, अमन, अहि, आँख शब्द आएंगें।

निर्धारण

अंक ⟶ अंकित ⟶ अक्ष ⟶ अक्षर ⟶ अतुल ⟶ अनिल ⟶ अमन ⟶ अहि ⟶ आँख होगा।

2. करम, कृषि, कर्म, कातर, क्रम, क्या, कुकर, केला, कोरम का क्रमशः स्थान होगा –

करम–	क् + अ + र् + अ + म् + अ	1
कृषि–	क् + ऋ + ष् + इ	5
कर्म–	क् + अ + र् + म् + अ	2
कातर–	क् + आ + त् + अ + र् + अ	3
क्रम–	क् + र् + अ + म् + अ	9
क्या–	क् + य् + आ	8
कुकर–	क् + उ + क् + अ + र् + अ	4
केला–	क् + ए + ल् + आ	6
कोरम–	क् + ओ + र् + अ + म् + अ	7

सही क्रम

करम ⟶ कर्म ⟶ कातर ⟶ कुकर ⟶ कृषि ⟶ केला ⟶ कोरम ⟶ क्या ⟶ क्रम

3. विश्राम, अँधेरा, प्रेम, पृष्ठ, कर्ता, कर्त्तव्य, उत्कंठा, क्षमा, त्रिया, समीप को क्रमशः रखो।

विश्राम –	व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ	9
अँधेरा –	अँ + ध् + ए + र् + आ	1
प्रेम –	प् + र् + ए + म् + अ	8
पृष्ठ –	प् + ऋ + ष् + ठ् + अ	7
कर्ता –	क् + अ् + र् + त् + आ	3
कर्तव्य –	क् + अ + र् + त् + व् + य् + अ	4
उत्कंठा –	उ + त् + क् + अं + ठ् + आ	2
क्षमा –	क् + ष् + अ + म् + आ	5
त्रिया –	त् + र् + इ + य् + आ	6
समीप –	स् + अ + म् + ई + प् + अ	10

सही क्रम

अँधेरा ⟶ उत्कंठा ⟶ कर्ता ⟶ कर्त्तव्य ⟶ क्षमा ⟶ त्रिया ⟶ पृष्ठ ⟶ प्रेम ⟶ विश्राम ⟶ समीप

निम्न में से सबसे पहले आने वाला शब्दकोशीय शब्द है।

उद्योग, उधार, उदबुद्ध, उपकार

उद्योग –	उ + द् + य् + ओ + ग् + अ	2
उधार –	उ + ध् + आ + र् + अ	3
उदबुद्ध –	उ + द् + अ + ब् + उ + द् + ध् + अ	1
उपकार –	उ + प् + अ + क् + आ + र् + अ	4

सही क्रम

(सबसे पहले) उदबुद्ध ⟶ उद्योग ⟶ उधार ⟶ उपकार (सबसे बाद में)

निम्न में से कौनसा शब्द सबसे अन्त में आएगा।

निर्दोष, निष्पक्ष, निष्ठुर, निर्दय

निर्दोष –	न् + इ + र् + द् + ओ + ष् + अ	2
निष्पक्ष –	न् + इ + ष् + प् +अ + क् + ष् + अ	4
निष्ठुर –	न् + इ + ष् + ठ् + उ + र् + अ	3
निर्दय –	न् + इ + र् + द् + अ + प् + अ	1

सही क्रम

निदर्य (1) ⟶ निर्दोष (2) ⟶ निष्ठुर (3) ⟶ निष्पक्ष (4)

हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण

मानवीकरण का अर्थ – 'त्रुटि रहित या श्रेष्ठ

परिभाषा – लिपि के विविध स्तरों पर पाई जाने वाली विषम रूपता को दूर कर उसमें एकरूपता लाना ही मानकीकरण है।

एक ध्वनि को अंकित करने के लिए विविध लिपि चिह्नों में से एक को मान्यता दी जाती है।

जैसे – देवनागरी लिपि मे निम्न वर्ण द्विविध प्रकार से लिखे जाते है।

अमानक रूप		**मानक रूप**
अ	–	अ
झ	–	झ
ण	–	ण
रव	–	ख
ध	–	ध
भ	–	भ
ल	–	ल

हिन्दी भाषा में मानकीकरण युक्त शब्दावली

स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ,

अनुस्वार – अं

विसर्ग – अः

अनुनासिक – अँ

मात्राएँ – ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ

व्यंजन – क, ख, ग, घ, ङ.
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
श, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन – क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ), श्र (श्+र)

अमानक		**मानक**
क्‌ष	–	क्ष
त्‌र	–	त्र
ज्‌ञ	–	ज्ञ
श्‌र	–	श्र

- ध्वनियों के उच्चारण मे भी एकरूपता लानी आवश्यक है। क्षेत्रीय उच्चारण के कारण लोग अलग–अलग ढंग से एक ही ध्वनि का उच्चारण करते है।
  जैसे – पइसा, पाइसा, पैसा
  इनमें से पहला, दूसरा उच्चारण अमानक व केवल तीसरा उच्चारण मानक है।
- भय्या को भैया, गवय्या को गवैया, रुपइया को रुपैया कव्वा को कौवा लिखा जाना चाहिए।
- ङ. छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह के संयुक्ताक्षर हलंत (्) लगाकर बनाने से ही मानक शब्द बनते है।
  जैसे – बट्‌टर, बूड्‌ढा, कद्‌दू, चिह्न
- वर्गो के पंचमाक्षर के बाद यदि उसी वर्ग का कोई वर्ण हो तो वहाँ अनुस्वार का प्रयोग ही करना चाहिए।

जैसे – वंदना, हिंदी, चंदन, अंत, गंदा, ठंडा, गंगा

नोट – यदि पंचमाक्षर के बाद अन्य वर्ग का वर्ण या वही पंचमाक्षर फिर से आए तो वह अनुस्वार में नहीं बदलेगा।

जैसे – जगन्नाथ, वाड्.मय

- संबोधन के लिए प्रयुक्त पदों के बहुवचन रूप में अनुनासिक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
  जैसे – भाइयों, बहनों का प्रयोग जब संबोधन के लिए होगा तो ये भाइयो, बहनो बन जायेंगे।
- वर्तनी की एकरूपता भी भाषा की शुद्धता के लिए परम आवश्यक है। मानक रूप में ई, यी, ये, ए के प्रयोग कहाँ करने चाहिए और कहाँ नहीं –
  - (i) संज्ञा शब्दों के अन्त में 'ई' का प्रयोग होना चाहिए 'यी' का नहीं
    जैसे – भलाई, बुराई, मिठाई, लड़ाई, खुदाई, पढ़ाई
  - (ii) जिन क्रियाओं के भूतकालिक एकवचन रूप के अंत में 'या' आता है, उसके बहुवचन रूप में 'ये' और स्त्रीलिंग रूप में 'यी' का प्रयोग उचित है।
    जैसे – आया – आयी – आये
    गया – गयी – गये
  - (iii) जिन क्रियाओं के भूतकालिक पुल्लिंग एक वचन के अंत में 'आ' आता है, उसके बहुवचन रूपों में 'ए' और स्त्रीलिंग रूपों में 'ई' का प्रयोग उचित है।
    जैसे – हुआ – हुई, हुए शुद्ध प्रयोग है।
  - (iv) विधि क्रिया और अव्यय में 'ए' का प्रयोग ही उचित है।
    जैसे – चाहिए, दीजिए, लीजिए, कीजिए, पीजिए, इसलिए, के लिए
  - (v) अव्यय शब्द सदैव अलग करके लिखे जाएँ
    जैसे – अभी–अभी, आज तक
  - (vi) हिन्दी में विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से पृथक तथा सर्वनाम शब्दों के साथ जोड़कर लिखे जाएँ।
    जैसे – मनीष ने, रमन का, उसने, हमने
  - (vii) पूरे पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि शब्दों को पृथक से नहीं लिखा जाता है।
    जैसे – प्रतिदिन, प्राणिमात्र, यथाशक्ति
  - (viii) संस्कृत के जो शब्द विसर्ग युक्त है यदि वे तत्सम रूप में हिन्दी में लिखे गये हो तो विसर्ग सहित लिखे जाने चाहिए, किन्तु यदि तद्भव रूप में प्रयुक्त हो तो बिना विसर्ग के भी काम चल सकता है।
    जैसे – (दुःख) तत्सम रूप में
    दुख – तद्भव रूप में } दोनों का प्रयोग ठीक है।
  - (ix) पूर्व कालिक 'कर' प्रत्यय क्रिया से मिलाकर लिखा जाए।
    जैसे – नहाकर, लिखकर, पढ़कर, खेलकर
  - (x) हिन्दी में 'द्' से बनने वाले सभी शब्द मानक रूप में हलन्त रूप में लिखे जाएँ –
    जैसे – विद्या, द्य, द्व, विद्यालय
- हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों की वर्तनी का मानकीकरण हिन्दी निदेशालय ने किया। इनमें मानक शुद्ध रूप निम्नवत् है।

एक	ग्यारह	इक्कीस	इकतीस	इकतालीस	इक्यावन	इकसठ
दो	बारह	बाईस	बत्तीस	बयालीस	बावन	बासठ
तीन	तेरह	तेईस	तैंतीस	तैतालीस	तिरपन	तिरसठ
चार	चौदह	चौबीस	चौंतीस	चवालीस	चौवन	चौंसठ
पाँच	पंद्रह	पच्चीस	पैंतीस	पैंतालीस	पचपन	पैंसठ
छः, छह	सोलह	छब्बीस	छत्तीस	छियालीस	छप्पन	छियासठ

सात	सत्रह	सत्ताईस	सैंतीस	सैंतालीस	सतावन	सड़सठ
आठ	अठारह	अठाईस	अड़तीस	अड़तालीस	अठावन	अड़सठ
नौ	उन्नीस	उनतीस	उनतालीस	उनचास	उनसठ	उनहत्तर
दस	बीस	तीस	चालीस	पचास	साठ	सत्तर

इकहत्तर	इक्यासी	इक्यानवे
बहत्तर	बयासी	बानवे
तिहत्तर	तिरासी	तिरानवे
चौहत्तर	चौरासी	चौरानवे
पचहत्तर	पचासी	पचानवे
छिहत्तर	छियासी	छियानवे
सतहत्तर	सतासी	सतानवे
अठहत्तर	अठासी	अठानवे
उनासी	नवासी	निन्यानवे
अस्सी	नब्बे	सौ

- कुछ क्रिया रूपों में भी मानकीकरण किया गया है।

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**
करा	किया
होएंगे	होंगे
होयगा	होगा

- नासिक्य व्यंजन जहाँ स्वतंत्र रूप से संयुक्त हुए हो वहाँ से अपने मूल रूप में लिखे जाने चाहिए, अनुस्वार के रूप में नहीं।
  जैसे – अन्न, गन्ना, उन्मुख, सम्मति, सन्मति।
- 'क' से बनें संयुक्ताक्षर निम्न रूप में लिखे जाने चाहिए।

जैसे	**अमानक**	**मानक**
	सुक्ति	सुक्ति
	मुक्ति	मुक्ति
	व्यक्ति	व्यक्ति
	संयुक्त	संयुक्त

- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण का प्रकाशन 1983 ई. में किया गया।

तत्सम - तद्भव

शब्दों को अलग-अलग रूपों में रखा जा रहा है-

1. विकास या उद्गम की दृष्टि से शब्द-भेद

इस दृष्टि से शब्दों को चार वर्गों में रखा गया है-

(क) तत्सम शब्द - वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित है। अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति-चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते हैं और हिंदी में वे उनसे रहित। जैसे-

संस्कृत में कर्पूरः, पर्यङ्कः, फलम् ज्येष्ठः
हिंदी में कर्पूर, पर्यङ्क, फल ज्येष्ठ

(ख) तद्भव शब्द - (उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने हैं और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते हैं। जैसे-

कर्पूर > कपूर
पर्यङ्क > पलंग
अग्नि > आग आदि।

नोट - नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है इन्हें देखे और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है ?

तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लू	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गदहा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लुक	भालू	श्वसुर	ससुर
श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग/सौभाग्य	सुहाग
कर्म	काम	हास्य	हँसी
स्नेह	नेह	कूप	कुआँ
लोक	लोग	कातर	कायर
कुठार	कुल्हाडा	शिक्षा	सीख
शाक	साग	पक्व	पक्का
गणना	गिनती	इष्टिका	ईंट
श्वश्रू	सास	काक	काग
विष्ठा	बीठ	भित्ति	भीत
कज्जल	काजल	शर्करा	शक्कर
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	मालिनी	मलिन
अगम्य	अगम	नव्य	नया
ताम्र	ताँबा	पौत्र	पोता
प्रस्तर	पत्थर	शया	सेज
मृत्यु	मौत	स्तन	थन
श्रृंगार	सियार	मस्तक	माथा
स्वामी	साईं	हरिद्रा	हल्दी
चंचु	चोंच	अपूप	पूआ
प्रिय	पिया	श्रृंखला	साँकल
कारवेल	करेला	चतुष्पादिका	चौकी
मृतिका	मिट्टी	अर्द्धतृतीय	ढाई
पर्यंक	पलंग	शुष्क	सूखा
कूट	कूडा	क्षीर	खीर
खर्पर	खपरा	घट	घडा
चणक	चना	काया	काय
पक्ष	पंख	सप्त	सात
अक्षात	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्राता	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला	लाक्षा	लाख
धरित्री	धरती	अक्षर	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	दधि	दही
याचक	जाचक	ग्राहक	गाहक
उपवास	उपास	अट्टालिका	अटारी
निर्वाह	निवाह	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर
पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस

दश	दस	स्वर्ण	सोना
गौरी	गोरी	हस्ती	हाथी
तिक्त	तीता	चतुर्दश	चौदह
मयूर	मोर	केतक	केवडा
सर्षप	सरसों	स्वप्न	सपना
हास	हँसी	उद्वर्तन	उबटन
वचन	बचन	परशु	फरसा
सर्प	साँप	शलाका	सलाई
रात्रि	रात	वत्स	बच्चा
क्षुर	छूरा	दुग्ध	दूध
पूर्णिमा	पूनम	सर्व	सब
मौक्तिक	मोती	आशिष	आसीस
चक्रवाक	चकवा	श्वसुरालय	ससुराल
घृत	घी	कंकण	कंगन
गिद्ध	गीध	भक्त	भगत
कांचन	कंचन	गर्भिणी	गाभिन
यशोदा	जसोदा	चरित्र	चरित
अभीर	अहीर	फाल्गुन	फागुन
श्याली	साली	योद्धा	जोधा
पक्षी	पंछी	अंजलि	अँजुरी
दंतधावन	दातुन	जव	जौ
छिद्र	छेद	जामाता	जमाई
यश	जस	सूचि	सुई
रात्रि	रात	अद्य	आज
ओष्ठ	होंठ	कुक्कुर	कुत्ता
अक्षर	अच्छर (आखर)	अमृत	अमिय
आश्चर्य	अचरज	अक्षत	अच्छत
अक्षत	अच्छत	आशा	आस
इक्षु	ईख	उत्साह	उछाह
अनुर्वर	ऊसर	ऊषर	ऊसर
कंकण	कंगन	कुपुत्र	कपूत
कांस्यकार	कसेरा	कर्कट	केवडा
क्षत्रिय	खत्री	क्षेत्र	खेत
ग्रंथि	गांठ	गोस्वामी	गोसाई
चौर	चोर	छाया	छाह
दीपावली	दीवाली	नियम	नेम
पंक्ति	पंगत	पक्षी	पंछी
प्रहर	पहर	पत्रिका	पाती
मित्र	मीत	मुख	मुँह
श्मश्रु	मूँछ	मेघ	मेह
साक्षी	साखी	स्वप्न	सपना
हस्ति	हाथी	हृदय	हिय
सर्प	सांप	वज्रांग	बजरंग
वृक्ष	बिरख	अज्ञान	अजान
अनशन	अनसन	यजमान	जजमान

देशज शब्द :–

- देशज शब्द वे शब्द शब्द वे शब्द हैं जिनका जन्म देश में ही हुआ है।
- देशज शब्द की एक विशेषता यह भी है कि उसमें लोक या अंचल की संस्कृति की महक महसूस की जा सकती है।
- भारत में दूसरी भाषा से लिये गए शब्द भी देशज कहलाएंगे अगर उस भाषा का जन्म भारत में हुआ हो।

प्रमुख देशज शब्द

द्रविड़ भाषाओं से	अपने गठन से/मनगठित शब्द
ओसारा, कच्चा, कज्जल, कटोरा, काका, केड, कुटी, कुप्पी, केतकी, चक्का, चिकना, चूड़ी, झंझा, झूठ, टंटा, टोपी, ठेस, डंका, नीर,पिंड, पेट, भंगी, माला, मीन, मुकुट, लाठी, लोटा, सूजी, इडली, डोसा, सांभर, पिल्ला आदि।	अनुकरणात्मक या ध्वन्यात्मक शब्द–अंडबंड, ऊटपटांग, कड़क, किलकारी, खटपट, खर्राटा, गड़गड़, चटक, चटपटा, चिड़चिड़ा, चुटकी, छिछला, झंकार, टंकार, ठठेरा, भभक, भोंपू, कटकटाना, खटखटाना. खुरचना, घुड़की, सनसनाहट, हिनहिनाना आदि।

विदेशज शब्द

- विदेशज शब्द वे शब्द हैं जो हमारे देश में नहीं उपजे बल्कि सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रक्रिया में हिंदी भाषा में स्वीकार किये गए हैं।
- हालाँकि विदेशज और देशज, दोनों ही प्रकार के शब्द दूसरी भाषाओं से संबद्ध होते हैं, किंतु देशज शब्दों का संबंध इसी देश की भाषाओं और विदेशज का विदेशी भाषाओं से होता हैं।

प्रमुख विदेशज शब्द

तुर्की शब्द	उर्दू, काबू, कैंची, कुली, कुर्की, चाकू, चिक, चम्मच, चकमक, चेचक, तमगा, तलाश, तुर्की, तोप, तोशक, नौकर, बारूद, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा, लाश, सराय, सुराग।
अरबी शब्द	अजब, अजीब, अदालत, अक्ल, अल्लाह, असर, आखिर, आदमी, आफत, अमीर, इनाम, इजलास, इरजत, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान. औरत, औसत, कब्र, कमाल, कर्ज, किस्मत, कालीन, कीमत, किताब, कुरसी, खत, खत्म, खिदमत, ख्याल, जिस्म, जुलूस, जलसा जवाब, जहाज, जलेबी, ज़िक्र, तमाम, तकदीर, तारीख, तकिया, तरक्की, दवा, दावा, दिमाग, दुनिया, नतीजा, नहर, नकल, फकीर, फिक्र, फैसला, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मजबूर, मुकदमा, मौसम, मौलवी, मुसाफिर, यतीम, राय, लिफाफा, बारिस, शराब, हक, हजम, हाजिर, हिम्मत, हुक्म, हैजा, हौसला, हकीम, हलवाई।
फ़ारसी शब्द	आबरू, आतिशबाजी, आराम, आमदनी, आवारा, आवाज़, उम्मीद, उस्ताद, चापलूस, कारीगर, किशमिश, कुरता, कुश्ती, कूचा, खाक, खुद, खुदा, खामोश, खुराक, गरम, गज, गवाह, गिरफ्तार, गिर्द, गुलाब, चादर, चालाक,